Pratidhwani the Echo
A Peer-Reviewed International Journal of Humanities & Social Science
ISSN: 2278-5264 (Online) 2321-9319 (Print)
***Impact Factor: 6.28** (Index Copernicus International)*
Volume-IV, Issue-I, July 2015, Page No. 136-139
Published by Dept. of Bengali, Karimganj College, Karimganj, Assam, India
Website: http://www.thecho.in

भारतीय दर्शन एवं संत रविदास वाणी

Dr. Shiv Dutt Sharma
Associate Professor Govt. College Dhaliara, Kangra Himachal Pradesh, India
Aarti
Corresponding Author, Kangra Himachal Pradesh, India

Abstract

It is known from pre – historic times that India has been the hub of philosophical studies of the world. In the ancient times there were many contributors to the advancement of philosophical studies in the country. One of them was Sant Ravidass who although not very educated formally had a very deep grounding in the Vedas, Upnishads and Gita.

In the present study the works of Sant Ravidass have been studied to ascertain the various influences on the philosophy of Ravidass and his works. It was found that the Upanishads and Gita were the major influences on the works of this poet saint. In his works the major influence is of Brahma and Atma both of which have their origins in the Upnishads and Gita. All other aspects like body Sharir, Maya, and moksha all are based on the original philosophy of the Gita.

The poet Saint Ravidass therefore is influenced by these two major works of Indian philosophy.

इतिहास साक्षी है कि भारत आध्यात्म के क्षेत्र में तब से अग्रणी है जब सम्पूर्ण विश्व इस क्षेत्र में घुटनों के वल चलना सीख रहा था। भारत आध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शक रहा है।

प्राणियों में मानव विवेक प्रधान है, यही कारण है कि उसने प्रारम्भ से ही प्रत्येक पक्ष को विवेक की कसौटी पर कसने का सफल प्रयास किया है। विवेक के परिप्रेक्ष्य में परखे हुए ज्ञान को दर्शन कहा जा सकता है।

'दर्शन' का अर्थ है– 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' अर्थात जिसके द्वारा देखा जाए। दर्शन की व्युत्पत्ति लब्ध अर्थ को दृष्टि में रख कर यदि उसकी परम्परा के मूल उत्स का अनुसंधान किया जाए तो उपनिषदों और दूसरे शास्त्रों में उसका प्रचुरता से प्रयोग हुआ मिलता है।

दर्शनशास्त्र का जीवन से घनिष्ट संबंध है। वस्तुतः जीवन और दर्शन एक ही उद्देश्य के दो परिणाम हैं। दोनों का चरमलक्ष्य एक ही है। भारतीय दर्शन के दो भाग हैं– आस्तिक और अनास्तिक। आस्तिक दर्शन के अर्न्तगत वे दर्शन गिने जाते हैं–जो वेदों को प्रमाणिक मानते हैं जैसे – उपनिषद, गीता, सॉख्य और मीमांसा आदि।

इसी तरह अनास्तिक दर्शनों को भी दो भागों में बॉटा जा सकता है– एक चार्वाक दर्शन जो नास्तिक दर्शनों में अग्रणी है जो पूर्णतः वेद–निदंक है। दूसरे जैन, बौद्ध आदि जिन्होने वेदनिंदा तो की है पर संयत रूप में वस्तुतः भिन्न–भिन्न दर्शनों से प्रमाणित हो जाता है कि दर्शन क्षेत्र में भी विचार स्वतंत्रता रही।

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि प्रत्येक दर्शन और ज्ञान का उद्भव वेदों से हुआ है। कई दर्शनों की यद्यपि अपनी कुछ विशिष्ट विशेषताएं हैं इसलिए वह अपना पृथक अस्तित्व रखते हैं तथादि लगभग सभी दर्शन वेदों के ऋणी है।

यद्यपि मध्यकालीन अधिकांश संत पढे–लिखे एवं पोथीनुमा ज्ञानी नहीं थे तथापि फिर भी उन्हे अधिकांश ज्ञान वेदों से ही प्राप्त हुआ है। सभी संत वेदनिन्दक नहीं थे। गुरू रविदास जैसे कुछ संत अन्य संतो की अपेक्षा वेदों का अत्यधिक सम्मान करते थे। वेदों के ज्ञान को संतों ने मक्खन के रूप में उपनिषदों में प्रस्तुत किया है और उपनिषदों का ही प्रभाव अधिकतर परवर्ती दार्शनिकों पर पड़ा, फिर भी वैदिक प्रभाव को जानना युक्तिसंगत लगता है।

संतगुरू रविदास जी ने अन्य संतो के विपरीत वेदों को बहुत सम्मान से देखा यद्यपि वेदों के दधिरूपी ज्ञान को तत्कालीन विद्धान कवियों ने नवनीत के रूप में उपनिषदों में प्रस्तुत किया और उपनिषदों के ज्ञान का ही प्रभाव परवर्ती दार्शनिकों पर पड़ा।

गुरू रविदास जी भी सबके ज्यदा उपनिषदों एवं भगवत दर्शन से प्रभावित है, फिर भी वेदों के प्रति उनकी श्रद्धा अवश्य आलोच्य है। उनकी यह उक्ति वेदों के प्रति श्रद्धा और विश्वास को प्रकट करती हैः–

''चारिउं वेद कीया संजोति, जनु रविदास करै दण्डौति।''

संत रविदास वाणी में वेदों के सम्मान के अतिरिक्त आस्तिक दर्शन के और भी संकेत मिलते हैं। स्वयं वैष्णव प्रकृति के संत होने के कारण भी नास्तिकवाद की बुरी हवा उन्हे प्रभावित न कर पाई। संत गुरू रविदास जी को गुरू रामानंद जी की भॉति अद्वैतवाद के अतिरिक्त विशिष्टाद्वैतवाद ने भी प्रभावित किया।

भारतीय दर्शन परम्परा में ब्रह्म, जीव, जगत, माया, शरीर मोक्ष आदि तत्वों को ही दर्शन का आधार माना गया है। गुरू रविदास जी ने एक ही ब्रह्म के कई नाम गिना कर अंततः एक ब्रह्म को ही सर्वत्र बनाया है–

ब्रह्मः

''द्रिस्टि अद्रिस्टि गेय अस ग्याता।
एकमेके है रविदासा।।''

गुरू रविदास जी ने ब्रह्म के अनिर्वचनीय तत्व रूप का वर्णन किया है उनके अनुसार यह अनिर्वचनीय ब्रह्म अवध्य एवं नित्य है, उसे शब्दों द्वारा बॉधना बड़ा कठिन हैः–

''कहै रविदास अकथ कथा उपनिषद सुनीजै,
जस तू तस तूं ही, करू औम दीजै।''

उपनिषदों में ब्रह्म का ज्योतिस्वरूप वर्णन दार्शनिकों की अभिव्यक्ति है। संत रविदास जी ने भी इसी अनुरूप एक ब्रह्म का उद्घोष अपनी वाणी में किया है जो कि उपनिषदों में एक ब्रहम का सर्वत्र उल्लेख हैः–

''एकमेव ब्रह्म न द्वितीय।''

ब्रह्म का एक अन्य रूप भावनानिर्मित ब्रह्म है। वस्तुतः भक्त की भावना ही भागवान की प्राप्ति की प्रथम सीढ़ी है। इस भावना के आवेश में भक्त ब्रह्म की कई प्रकार से महिमा मंडित कल्पनाओं द्वारा संरचना करने का प्रयास करता है।

गुरू रविदास जी ने भी भावना से वैष्णव संतो की तरह अनेक रूपों से ब्रह्म के सगुण रूप को देखा है, उनके विभिन्न स्वरूपों का वर्णन इस प्रकार हैः–

क. भक्त–वत्सल प्रभु।
ख. भक्त–रक्षक प्रभु।
ग. भक्ततारक प्रभु।
घ. भक्त–रक्षार्थ अवतार।
ड. प्रभु में मानवीय संबंधों का आरोप।

जीवात्माः

भारतीय दर्शन के अनुरूप संत रविदास की आत्मा को ब्रह्मरूपा ही मानते हैं। उनका मानना है कि जैसे दीये के प्रकाश से अंधकार समाप्त हो जाता है, वैसे ही गुरू ज्ञान से मन का अंधेरा अर्थात कालुष्य समाप्त हो जाता है।

'दीपक कारे परगास सौ जिमि ग्रहि सिमिर नसाय।
रविदास च्यंता गुरू मंत्र, ब्रह्म रूप होय जाय।।''

रविदास वाणी में हमे वेदान्त का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है अतः संत रविदास भी इस शरीर को रथ और आत्मा को रथी स्वीकार कहते हैंः–

'रथ को चतुर चलावण हारौ।
खिण हॉके खिणं उभौ राखौ
न ही आन को सारो
जब रथ रहै सारथी था कै,
तब कौ रथहिं चलावै।

रवि0 वाणी 0 पृ0 95

जगतः

भारतीय दर्शन में बुद्धिजीवियों के विचारणीय विषय में से एक प्रमुख विषय है–जगत। जिस प्रकार प्रज्वलित अग्नि से उसी के अनुरूप सहस्त्रों चिंगारियां प्रकाशित होती है, और उसी अग्नि में विलीन हो जाती है उसी प्रकार यह जगत भी उसी से उत्पन्न होकर उसी में विलीन हो जाता हैः–

''वट के बीज जैसा आकार, पसरयों तीनि लोकपसार
जहॉ का उपज्या तहां विलाय, पसरयों तीनि लोक पसारा''

शरीरः

भारतीय दर्शन में शरीर को जगत के समान नश्वर अर्थात् नाशवान माना गया है। उपनिषदों का प्रभाव प्रायः रविदास वाणी में या रविदास भक्ति साधना पर दिखाई देता है। संत रविदास ने शरीर को नगर की संज्ञा दी है।

''सब घट मेरा सॉइयॉ, जलवा रह्यो दिखाई।।
रविदास नगर माहि रह्यो, न कुछ इत उत जाई।।

मायाः

मायावाद भारतीय दर्शन का प्रमुख आलोच्य विषय है। वेदों एवं पुराणों में माया का उल्लेख मिलता है। संत गुरू रविदास जी भी मायाजाल से परिचित है। सांसारिक माया जाल की भॉति गुरू रविदास जी ने अपने प्रभु अर्थात परमात्मा को 'भक्ति' के प्रेमजाल में फसाया है तथा प्रभु को चुनौति दे रहे हैं, कि यदि प्रभु आपने हमें संसारिक मायजाल में फंसाया है तो मैनें भी आपकी प्रेमाभक्ति के जाल में जकड़ा है। मैं तो अपनी भक्ति से इस संसारिक माया जाल से छूट जाऊॅगा, परन्तु आप मेरी प्रेमाभक्ति के जाल से छूटने का उपक्रम करें।

मोक्षः

मानव जीवन के प्रमुख चार ही उद्देश्य है– धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। परन्तु इन चारों में से मोक्ष यद्यपि लक्ष्य है तथापि सर्वोपरि एवं सर्वोत्तम लक्ष्य है। यह मानव जीवन के लिए शास्त्रोक्त है।

भारतीय दर्शन से धर्म में मुक्ति अथवा मोक्ष की परम्परा बड़ी पुरातन है। कहीं मोक्ष का अभिप्रायः दुख से मुक्ति है तो कहीं मृत्यु भय से मुक्ति माना गया है।

संत गुरू रविदास वाणी में मोक्ष वर्णन दृष्टव्य है। वेदान्त का पूर्णतयः अनुकरण करते हुए भी वह कहते है– हे देव! मेरे मन में जो कालुष्य संगठित है, इससे मुझे छुटकारा नहीं मिल रहा है, देव इस मन ने पॉचों विकारों ने कलुपित ग्रंथि को जन्म दिया जिससे मेरा जीवन नष्ट हो गया है।

''देव संसै गांठि न छूटै।'' –रवि0 वाणी–पद–15

इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संत रविदास वाणी में भारतीय दर्शन के लगभग सभी पहलुओं के दर्शन हो जाते हैं। संत रविदास जी ने भक्ति को मुक्ति का सर्वोत्तम साधन माना है। जहॉ तक ज्ञान से मुक्ति प्राप्त होने का प्रसंग है, यह प्रत्येक जीव के लिए सम्भव नहीं है। इसलिए रविदास वाणी में भक्तितत्व को प्रमुखता दी गई है जो भारतीय दर्शनानुसार है।

पुस्तक–सन्दर्भ सूचि

1.	शर्मा डा0 वेणी प्रसाद	संतगुरू रविदास वाणी	चण्ढीगढ़ विश्वभारती प्रकाशन सं0 2037 प्र0 सं0
2.	शर्मा डॉ0 वेणी प्रसाद	आदि गुरू ग्रंथ साहिव	चण्ढीगढ़ विश्वभारती प्रकाशन सं0 2037 प्र0 सं0

सहायक पुस्तके–संन्दर्भ सूचि

3.	उपाध्याय डॉ0 बलदेव	भारतीय दर्शन	वाराणसी चौखम्भा, अमर भारती प्र0 सन 1978 प्र0 स0
4.	उपाध्याय डॉ0 बलदेव	भारतीय दर्शन	वाराणसी शारदा संस्थान सन 1960 प्र0 ...
5.	उपाध्याय डॉ0 बलदेव	भारतीय दर्शन	वाराणसी, शारदा, संस्थान सन 1965 प्र0 स0
6.	उपाध्याय काशीनाथ	गुरू रविदास	एस. एल. के. सौंधी अमृतसर सन 1983
7.	शर्मा पं0 श्री राम	भारतीय संस्कृति एक	युग निर्माण योजना मथुरा सन 2002
8.	स्वामी विवेकानन्द	भक्ति योग	स्वामी ब्रहमस्थान्द नागपुर सन 2005
9.	कालेश्वर, काके साहिव एवं सहयोगी	हिन्दी के जनपद संत	वाराणसी, मोतीलाल वनारसी दास सन 1963
10.	आजाद पृथ्वी सिंह 'सम्पादन'	युग प्रवर्तक संत रविदास	जालन्धर दीपक पविलशर्ज सन 1983 प्र. स.
11.	गुप्ता, डॉ0 आशा	सगुण एवं निर्गुण हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन	प्रयाग हि0 सा0 ... सन् 1970 प्र0 स0
12.	चर्तुर्वेदी, परशुराम	उत्तरी भारत की संत परम्परा	प्रयाग, भारती भण्डारू सन 2008 प्र0 स0
13.	चर्तुर्वेदी, परशुराम	सतं काब्य	इलाहावाद, किताब महल सन 2007 प्र. स.
14.	तिवारी, रामानंद	भारतीय दर्शन का परिचय	प्रयाग भारती मंदिर सन 2009 प्र0 स0
15.	त्रिवेदी हजारी प्रसाद	हिन्दी साहित्य की भूमिका	नई दिल्ली, राज कमल प्र0 स0 1969
16.	पदम गुरू चरणसिंह	संत रविदास विचारक और कवि	जालन्धर नवचिन्तन प्रकाशन सन 1977
17.	मंजीठिया सुदर्शन सिंह	संत साहित्य	दिल्ली, रूपकमल प्रकाशन सन 1962
18.	सैणी डॉ0 धर्मपाल	रैदास	नई दिल्ली साहित्य अकादमी सन 1979 प्र0 स0
19.	शर्मा डॉ वेणी प्रसाद	संत रविदास की भक्ति साधना	चण्ढीगढ विश्वभारती प्रकाशन स0 2037 प्र0 स0
20.	सहगल, डा0 मनमोहन	संत काव्य का दार्शनिक विश्लेषण	चण्ढीगढ भारतेन्दु भवन सन 1965 प्र0 स0
21.	सिंघल डॉ0 धर्मपाल	गुरू रविदास जीवन ते विचारधारा	दिल्ली, पंजावी अकादमी सन 1989 प्र0 स0

कोश ग्रंथ सुची

22.	पाठक आर0 डी0	स्टैण्डर्डडल्यूस्ट्रोप्डि आफ हिन्दी ले0 पुएज	भार्गव वुकडिपो, वाराणसी सन 1968
23.	स0 कलिका प्रसाद	वृहद् हिन्दी कोश	ज्ञान मण्डल, लिमिटेड वाराणसी 1978